हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 17/07/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	13	3	4	4	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): DPmeena

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के सदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) चकवी बिछुटी रैणि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सूं, ते दिन मिले न राति।।

उपर्युक्त पद्यावतरण कबीर दास की साखियों के संग्रह कबीर ग्रंथावली के विरह को अंग से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कबीर जी चकवा पक्षी के माध्यम से अपने विरह की पीड़ा को व्यक्त करते है।

कबीर कहते है कि चकवा पक्षी जो कि शापित होने के कारण रात्रि वियोग सहता है किन्तु सुबह होते ही उनका मिलन हो जाता है किन्तु मैं तो कभी राम से न तो दिन में मिल पाता हूँ न ही रात्रि में।

अर्थात जीवात्म जब परमात्मा से अलग होकर इस लोक में आती है तो वह दिन-रात उससे वियोग सहने को मजबूर है। उनका मिलन तब ही संभव है जब जीवात्मा शरीर रूपी बंधन त्याग कर यहाँ से विदा ले जाती है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वि·

कबीर एक अन्य उदाहरण में 'पपीहे' के माध्यम से अपने विरह को स्पष्ट करते हैं।

विशेष :

① भाषा - सधुक्कड़ी

② अनुप्रास अलंकार

③ जायसी ने भी नागमती के विरह को दर्शाने के लिए पपीहे तथा चकवा पक्षी का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

उपर्युक्त पंक्तियाँ सूरदास कृत सूरसागर के ~~भ्रमरगीतसार~~ संकलन भ्रमरगीतसार (शुक्ल जी) से ली गई है। इन पंक्तियों में राधा के विरह की अभिव्यंजना की गई है।

राधा कृष्ण के मथुरा चले जाने के कारण विरह की पीड़ा झेल रही है। उसका मन बहलाने के लिए एक सखी वीणा वादन कर रही है किन्तु राधा उससे कहती है कि हे सखी इस वीणा को तुम दूर रख दो क्योंकि तुम्हारे द्वारा वीणा वादन के कारण चन्द्रमा के रथ के हिरण मोहित होकर रुक गये है, जिससे रात्रि नहीं बीत रही है और मेरी पीड़ा बढ़ती जा रही है।

आगे राधा कहती है कि जो प्रेम के पाश (जाल) में फँसता है उस पर क्या बीतती है यह केवल वही समझ सकता है, जो पीड़ा में है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब से श्रीकृष्ण मथुरा गये हैं अर्थात् उनके कमल रूपी नयनों का दीदार नहीं हुआ है तब से मेरी आँखों से अश्रुधारा बह रही है।

शीतल चन्द्रमा की चाँदनी भी मुझे अग्नि के समान लगती है अब तुम्ही बताओ मैं धैर्य कैसे धारण करू। हे प्रभु तुम्हारे दर्शन के बिना सारे प्रयास निरर्थक है।

<u>विशेष</u> :-

① ऐसा ही विरह वर्णन सूरदास ने अन्यत्र भी किया है -

"अतिमलीन वृषभानुकुमारी।
हरि समजल अंतर तन भीजे, ता लालच न धुवावति सारी।"

② कमलनयन - कमल के समान नयन (~~कर्मधारय समास~~) है जिसके - (कृष्ण) = बहुव्रीहि समास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

उपर्युक्त पद्यावतरण छायावाद के कवि निराला की प्रसिद्ध लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से लिया गया है। इस पद्यावतरण में युद्ध के पहले दिन की असफलता से निराश राम तथा उनके समूह की बैठक का वर्णन है।

~~उपर्युक्त~~ अमावस्या की रात्रि के कारण चारो ओर घना अंधकार है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि सभी दिशाओं को भूल गया है। इस घनी रात्रि में पवन का संचार भी स्तब्ध हो गया है। पीछे की ओर विशाल समुद्र अपनी लहरों से गर्जना कर रहा है और यह पर्वत योगी के समान समाधि की अवस्था में लीन है अर्थात् शांति की अवस्था है। केवल एक मशाल जल रही है।

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से निराला ने राम के निराश मन को भी अभिव्यक्त किया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

क्योंकि इस घोर निराशा रूपी अंधकार में उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :

① प्रकृति का सौंदर्य बहुत ही सुन्दर रूप में दर्शाया है।

② रात्रि के सौंदर्य का निरूपण महत्वपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'असाध्य वीणा' नामक कविता से अवतरित है, जिसकी रचना अज्ञेय ने की है। इन पंक्तियों में अज्ञेय ने वीणा वादन करने वाले राजकुमार द्वारा वीणा को बजाने में उसका श्रेय न होकर चकृति को श्रेय दिया है, दर्शाया है।

राजकुमार कहता है कि मैं तो वीणा वादन से पूर्व शून्य में डूब गया था अर्थात् मैंने स्वयं को इस वीणा को सौंप दिया था। अतः इस वीणा वादन में मेरा श्रेय नहीं के बराबर है।

आपने जो भी धुन सुनी वह मेरे द्वारा नहीं बजाई गई थी। वह तो अनन्त शून्य के द्वारा उत्पन्न की गई थी। वह अनन्त शून्य महामौन

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't writ anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होकर भी वादन कर सकता है। वह अविभाज्य है उसे द्रवित नहीं किया जा सकता और वह ~~शब्द~~ शब्दहीन होकर भी मधुर संगीत उत्पन्न करता है।

विशेष -

① इन पंक्तियों के माध्यम से अज्ञेय ने अपने दर्शन जैनबौद्ध मत का प्रक्षेपण किया है।

② प्रकृति की अनन्त क्षमता को दर्शाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

उपर्युक्त पद्यावतरण जायसीकृत पद्मावत के नागमती विरह खंड से लिया गया है। जायसी ने नागमती के विरह को बारहमासा के माध्यम से प्रकट किया है।

नागमती अपने पति रत्नसिंह के विरह में है और कहती है कि भाद्रपद का महिना आ गया है और इससे मेरा जीना और भी दूभर हो गया है। इस अंधियारी रात्रि में कैसे रहूँ। मेरा प्रियतम अन्यत्र चला गया है जिससे मेरा यह घर सूना है और यह सेज मुझे नागिन की भाँति डस रही है।

मैं अकेली इस शैय्या पर एक पाटी को पकड़े हुये विरह में रहती हूँ और मेरी आँखे आपका इंतजार करती रहती है, जिससे मेरा हृदय विरह से फटा जा रहा है। बिजली चमक रही है तथा बादल बरस रहे है जिससे मुझे यह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काल के समान प्रतीत हो रहे हैं क्योंकि विरह को बढ़ाकर मेरे प्राण लेने को आतुर है।

मेघा धीरे-धीरे बरस रहे हैं और विरह में मेरी आँखे उसी तरह बह रही है जैसे ओरी से पानी बहता है। आगे नागमती कहती है कि पूर्वा नक्षत्र लग चुका है और इससे वर्षा के कारण आक और जवासा सूख गये है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

'राम की शक्ति-पूजा' निराला की प्रसिद्ध कविता है जिसमें उन्होंने राम के औदात्य को स्थापित किया है साथ ही प्राचीन आख्यान में (कृतिवास रामायण) थोड़ा सा बदलाव करते हुये अपनी विशिष्ट भक्ति भावना का परिचय दिया है।

'राम की शक्ति-पूजा' में निराला की भक्ति-चेतना की विशिष्टता यह है कि वे राम को ईश्वर मानने की बजाय एक औदात्यपूर्ण मानव मानते है अर्थात् ईश्वर का मानवीकरण करते है। वे राम में मानव के सहज गुणों जैसे, निराशा, संशय की झलक प्रस्तुत करते है।

"स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर फिर संशय।"

उनके राम भी निराशा की स्थिति में साधारण मानव की भाँति रुदन करते है।

अपनी भक्ति चेतना की एक अन्य विशिष्टता के रूप में निराला प्रकृति को भी ईश्वर के रूप मे प्रतिष्ठित करते है। जिस प्रकार जायसी ने प्रकृति को 'गुरु सुवा जेहि पंथ दिखावा' के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के द्वारा गुरु रूप में स्थापित किया था, निराला ने उसी प्रकृति का ईश्वरीकरण किया है; जो उनकी भक्ति-चेतना को अन्य से विशिष्ट बनाता है।

"देखो बंधुवर! सामने स्थित वह भूधर
× × × × ×
पार्वती कल्पना है इसकी।"

कृत्तिवास रामायण में राम भक्ति के द्वारा साधना करते हुये शक्ति को प्रसन्न करते हैं किन्तु निराला ने 'योग साधना' के द्वारा शक्ति को प्रसन्न कराने का अद्भुत प्रयोग कर अपनी भक्ति चेतना का परिचय दिया है।

वस्तुतः निराला मानव के आंतरिक मन को स्थिर करना चाहते हैं ताकि वह किसी भी 'धनुभंग' को तत्पर रहे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'राम की शक्ति-पूजा' में निराला ने अपनी भक्ति चेतना के आधार पर एक ओर ईश्वर का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मानवीकरण किया तो वहीं दूसरी ओर प्रकृति का ईश्वरीकरण किया है। जो वर्तमान में प्रकृति संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखता है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't writ
anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये।' इस पंक्ति के आलोक में भारत-भारती का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this s

भारत-भारती नवजागरण चेतना से युक्त कविता है, जिसके द्वारा गुप्त जी ने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन से जनता को जोड़ा तथा एक सुखद भविष्य की राह दिखाई।

इस कविता की केन्द्रीय पंक्ति यही है कि 'कवि कर्म केवल मनोरंजन का नहीं है क्योंकि कवि अपनी सृजनात्मकता से कविता को एक हथियार के रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

वस्तुतः गुप्तजी से पहले रीतिकालीन शृंगारिकता को आधार बनाकर ही कवि कार्य किया जा रहा था जिसका मूल विषय यमुना तट पर राधा-कृष्ण शृंगार था। गुप्त जी ने कवियों को कहा कि "यमुना तट पर शृंगार का वर्णन अब निरर्थक है क्योंकि नवजागरण में कविताओं में विषयगत वैविध्य होना चाहिए।

उन्होंने स्वयं कविताओं को विभिन्न विषयों से युक्त करने का प्रयास किया। इसी प्रयास में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-भारती के द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया।

उन्होंने अपनी कविताओं में उचित मर्म का ध्यान रखते हुये भविष्य के असीम समाधान प्रस्तुत किये। चूंकि तत्कालीन कविता का एक उचित मर्म उसे राष्ट्रीय चेतना से युक्त करना था जिसके लिए उन्होंने अतीत की गहराईयों को प्रस्तुत किया।

"संसार को पहले हमीं ने ज्ञान-शिक्षा दान की।
आचार की, व्यापार की, व्यवहार की, विज्ञान की॥"

राष्ट्रीय चेतना का एक पहलू यह होता है कि आत्म आलोचना कर सके। उन्होंने भारत की दुर्दशा के कारणों की खोज की तथा एकता पर बल दिया।

"सप्रेम हिल मिल कर चलो, यात्रा सुखद होगी तभी।
पीछे हुआ सो हो गया, अब सामने देखो सभी॥"

उचित उपदेश देते हुये उन्होंने समय की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महिमा को भी प्रकट किया।

"हमें नित्य ही समय देखकर चलना चाहिए। बदले हवा जब जिस तरह हमें भी बदलना चाहिए।"

इसी प्रकार उन्होंने अपने कवित्व को सिद्ध करते हुये किसानों की समस्या, विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा, आर्थिक निकासी सिद्धांत, गरीबी निवारण के उपाय आदि विविध विषयों को प्रस्तुत किया। जिससे जनता तक कविता को हथियार के रूप में पहुँचाने का प्रयास किया जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाने में सफलता मिली।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कामायनी' बिंब-विधान की दृष्टि से एक सफल कृति है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं। सोदाहरण उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिम्ब किसी भी रचना का सौंदर्य बढ़ाते है क्योंकि बिम्बों के द्वारा रचना पठित रूप में नहीं बल्कि दृश्य रूप में पाठक मन को प्रभावित करती है।

'कामायनी' की सफलता का एक प्रमुख कारण इसका बिम्ब विधान है। जिस प्रकार सूरदास ने अपने काव्य में सुन्दर बिम्बों का प्रयोग करते हुये उसकी रसात्मकता को बढ़ाया तथा बिहारी ने अपनी काव्य कुशलता का परिचय दिया, उसी प्रकार प्रसाद ने भी कामायनी में बिम्ब विधान को महत्व दिया।

कामायनी में बिम्ब विधान इसके आरंभ से ही दिखाई देता है। जब मनु हिमालय के शिखर पर अकेला बैठा रहता है।

"हिमालय के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छाह
एक पुरुष देख रहा था,
वह विप्लव जल प्रवाह।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अतिरिक्त ~~[illegible]~~ जब मनु चिंता में बैठा हुआ अपनी सभ्यता के पतन को सोचता है तब वह कहता है-

"दिग्दाहों से धूम उठे या,
जलधर उठे क्षितिज तट के।"

प्रसाद ने कामायनी में बिम्ब विधान का सधा हुआ प्रयोग किया है, जो इस रचना का प्रभाव अधिक गहरा करती है।

भावनाओं की गहराई इन बिम्बों को अधिक सजीवता प्रदान करती है क्योंकि समान मानसिक स्थिति मानव को समान दृश्य दिखाती है। वे आगे श्रद्धा तथा मनु की तुलना देवदार के वृक्ष से भी करते है।

"दो योगी देवदारु से खड़े।"

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कामायनी में प्रसाद ने बिम्ब विधान का ध्यान रखते हुये अपनी काव्य कला की विशिष्टता का परिचय दिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी हिन्दी का अंतिम उपन्यास है। इसकी कथा मनु और श्रद्धा द्वारा सृष्टि के विकास की है किन्तु अपने अर्थ-गर्भत्व के कारण यह प्रतीकात्मक अर्थ भी धारण करती है।

वस्तुत: स्वयं प्रसाद ने कहा था कि "यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इसमें रूपक का अद्‌भुत मिश्रण हो गया है। इसके पात्र अपना ऐतिहासिक महत्व रखते हुये प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करे तो मुझे आपत्ति नहीं है।"

इसके आधार पर कामायनी को मानव-मन तथा मानवता के विकास की कहानी के रूप में भी परिभाषित किया गया है। कामायनी का पात्र मनु मानव मन का प्रतीक है जो आरंभ में अपना सर्वस्व नष्ट हो जाने के कारण चिंता में है।

किन्तु इसी चिंता के आलोक में उसे आशा की किरण दिखाई देती है क्योंकि मानव मन ~~अ~~ सुख और दुख के बीच संचरित होता है। आशा के परिणामस्वरूप उसमें प्रकृति के प्रति श्रद्धा भाव का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकास होता है।

काम, वासना तथा लज्जा मानव मन की स्वाभाविक विकास में उत्पन्न होने वाले गुण है। इसके पश्चात् वह तार्किकता की खोज मे बढ़ता है जिसके कर्म, ईर्ष्या तथा इड़ा आदि सर्गों में देखा जा सकता है।

आगे की कहानी मानव मन की स्वाभाविक कहानी नहीं है किन्तु अधिक समय तक दुखी रहने पर आध्यात्म में विश्वास बढ़ता है जिसे दर्शन, रहस्य तथा आनन्द सर्ग में देखा जा सकता है।

मानव मन की कहानी के साथ कामायनी मानवता के विकास की भी स्वाभाविक कहानी प्रतीत होती है। मानव अपने विकास के प्रथम चरण में विद्यमान असुरक्षाओं के कारण चिंतित रहा होगा किन्तु अगले ही क्षण प्रकृति की रहस्यमयी योजनाओं को समझकर उसमें आशा तथा श्रद्धा भाव का विकास हुआ होगा।

काम तथा वासना मानव के स्वाभाविक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

गुण है तथा सामाजीकरण की प्रक्रिया में लज्जा का विकास हुआ होगा। तत्पश्चात् विज्ञान के द्वारा भौतिक विकास की ललक ने उसे कर्म के लिये प्रेरित किया होगा।

किन्तु अत्यधिक भौतिक विकास के कारण उसका मन पुनः दुखी हुआ होगा जिससे वह निर्वेद स्थिति में पहुँचा होगा तथा अध्यात्म की ओर उसका विश्वास प्रगाढ़ होने पर आनन्द की प्राप्ति को तत्पर हुआ होगा।

वर्तमान समय में भी देखा जा सकता है कि अत्यधिक भौतिक विकसित देश पुनः अध्यात्म की खोज में है जिससे कामायनी मानवता के विकास की कहानी पवित्र होती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कोई भी रचना बदलते समय के साथ नये-नये आयाम धारण कर अपनी प्रासंगिकता बनाये रखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्तिपूजा' निराला की प्रसिद्ध कविता है। चूंकि छायावादी कवि की रचना अपने अर्थगर्भत्व के कारण जानी जाती है। 'राम की शक्तिपूजा' भी अनेक केन्द्रीय संवेदनाएँ रखती है।

डॉ. निर्मला जैन ने 'राम की शक्तिपूजा' को शक्ति-काव्य के रूप में माना है। उनके अनुसार इस कविता की मूल संवेदना 'अन्याय जिधर है, उधर शक्ति' है, जो इसे शक्ति काव्य के रूप में प्रतिस्थापित करता है क्योंकि राम उसी शक्ति को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न करते है।

कविता की शुरुआत 'रवि हुआ अस्त' तथा 'है अमानिशा' जैसे निराशावाद से होने के पश्चात् यह सीता को मुक्त कराने के लिए शक्ति की खोज में लग जाती है।

जामवन्त राम से कहते है कि शक्ति साधना के पक्ष में है न कि अनैतिकता के पक्ष में। अतः तुम भी साधना के द्वारा शक्ति को प्रसन्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करो।

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर।"

आगे जामवन्त राम से शक्ति को अपने पक्ष में करने के लिए मौलिक कल्पना के लिए कहते है ताकि शक्ति रावण पक्ष को त्यागकर उनके पक्ष में आ जाये।

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न हो सिद्धि रघुनन्दन।"

इसके पश्चात राम शक्ति की आराधना द्वारा उन्हे अपने पक्ष में करते है तथा यहीं से उनका 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' व्यक्तित्व उभर कर आता है।

इसे शक्ति काव्य के रूप में तत्कालीन स्वतंत्रता संग्राम से भी जोड़ा जा सकता है क्योंकि अन्याय अर्थात ब्रिटिशों के पक्ष में शक्ति है जिससे स्वतंत्रता संग्राम के नेता चिंतित है वो एक नवीन शक्ति की कल्पना करते है, जो जनता की रूप से संचरित होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी शक्ति के फलस्वरूप नवीन चेतना का संचार कर सीता रूपी स्वतंत्रता की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'राम की शक्तिपूजा' शक्ति काव्य के रूप में भी प्रस्तुत की जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-भारती' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की भविष्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैथिलीशरण गुप्त नवजागरण चेतना के कवि है। उन्होंने आत्मगौरव तथा आत्मआलोचना की रचनात्मक ऊर्जा के फलस्वरूप 'भारत-भारती' की रचना की।

उनकी भविष्य दृष्टि उन्हे राष्ट्रकवि के रूप में स्थापित करती है। वे अपनी भविष्य दृष्टि के आधार पर तत्कालीन समस्याओं को समाधान प्रस्तुत करते हैं, जो आज भी प्रासंगिक है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भारत दुर्दशा में शिक्षा तथा तकनीकी के अर्जन पर बल देते हुये उसे भारत की गरीबी उन्मूलन का साधन मानते है, गुप्त जी ने भी इसी आधार पर उत्पादन को स्वदेश से जोड़ने की प्रेरणा दी।

"अब तो उठो बंधुओ, निज देश की जय बोल दो।
बनने लगो सब वस्तुएँ, कल कारखाने खोल दो।।"

उनकी यह दृष्टि वर्तमान में भी मेक इन इंडिया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के रूप में विद्यमान है।

उनकी भविष्य दृष्टि का एक पक्ष तत्कालीन साम्प्रदायिकता की समस्या का समाधान है। प्रसाद जी जिस प्रकार स्कन्दगुप्त तथा चन्द्रगुप्त में ब्राह्मण-बौद्ध संघर्ष की समाप्ति कराते है उसी तरह गुप्त जी भी मिल-जुल कर चलने की सलाह देते है-

"सप्रेम मिलजुल कर चलो, यात्रा सुखद होगी तभी।
पीछे हुआ सो हो गया, अब सामने देखो सभी।।"

उनकी इस पंक्ति में सर्वे भवन्तु सुखिन का भाव स्पष्ट होता है जो केवल मानव के स्तर पर ही नहीं बल्कि राष्ट्रों के स्तर पर भी लागू होता है, जो वर्तमान सतत विकास लक्ष्य के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

शिक्षा के संबंध में उनके विचार आज भी अपनी प्रासंगिकता रखते हैं। उन्होंने साम्प्रदायिक शिक्षा का सदा विरोध किया तथा तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया ताकि वैज्ञानिक चिंतन का विकास हो सके -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"साहब! यौरोपियन हिन्दी अब हमें न दिखलाइये।
~~क~~ बैलून की रचना कृपा कर सिखलाइये।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि मैथिलीशरण गुप्त अपनी समन्वयकारी तथा सकारात्मक भविष्य दृष्टि के कारण वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त गद्यावतरण 'स्कन्दगुप्त' नाटक से अवतरित है, जिसकी रचना जयशंकर प्रसाद ने की है। जयशंकर प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना की झलक स्कन्दगुप्त में आद्यान्त दिखाई देती है।

उक्त पंक्तियों में देवसेना सुखों की क्षणिकता को स्पष्ट करते हुये उनकी निरर्थकता सिद्ध करती है।

देवसेना स्कन्दगुप्त से कहती है कि कष्ट ही हृदय को मापने की कसौटी है कि हृदय कितना धैर्य धारण करता है जिस प्रकार एक साधु तपस्या के द्वारा अत्यन्त धीर हो जाता है उसी प्रकार कष्ट सहकर भी हृदय धीरता धारण करता है।

आगे वह कहती है कि जितने भी सुख उपलब्ध हैं वे क्षणिक है क्योंकि सुख के पश्चात् दुख का आगमन ही प्रकृति का नियम है। सुख-दुख का चक्र चलता रहता है। यदि आज सुख करोगे तो तो कल दुखी होना पड़ेगा। अतः दूजों से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बचने का एकमात्र उपाय यह है कि इन सभी क्षणिक सुखों को त्याग देना चाहिए।

विशेष :

① इन पंक्तियों के माध्यम से प्रसाद ने अपने दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन को प्रकट करने का प्रयास किया है।

② स्कन्दगुप्त भी इसी प्रकार की पंक्ति अन्यत्र कहता है -

"अधिकार सुख मादक और सारहीन है।"

③ इसकी भाषा तत्सम खड़ी बोली हिन्दी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त पंक्तियाँ मोहन राकेश कृत नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से अवतरित है। मोहन राकेश नवलेखन दौर के रचनाकार है तथा अस्तित्ववादी दर्शन की झलक उनकी रचनाओं की विशिष्टता है।

कालिदास की पत्नी प्रियंगुमंजरी ये पंक्तियाँ कहते हुये राजनीति में समय की पाबन्दता का महत्व समझाती है।

प्रियंगुमंजरी कहती है कि राजनीति में क्षण भर में स्थिति बदल सकती है। अतः प्रत्येक क्षण महत्वपूर्ण होता है। यदि एक क्षण भी ध्यान न दिया जाये तो कुछ अनिष्ट की आशंका रहती है। कोई भी बड़ा राजनीतिक बदलाव हो सकता है, जो पूरी राजनीति को ही परिवर्तित कर सकता है। अतः राजनीति में व्यक्ति को हमेशा जागरूक रहना पड़ता है।

विशेष -

① इसी प्रकार की पंक्तियाँ 'महाभोज' में दा साहब

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

धारा लेखन में कही जाती है।

② भाषा शैली तत्समी है।

प्रासंगिकता :

ये पंक्तियाँ वर्तमान में उतनी ही प्रासंगिक है क्योंकि कोई भी देशकाल हो राजनीतिक स्थितियाँ सामान्यतः एक समान होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त पंक्तियाँ नयी कहानियों के संकलन 'एक दुनिया: समानान्तर' से ली गई है। इस संकलन की कहानी 'कोई दूसरी दिशाएँ' से उद्धृत है, जिसकी रचना निर्मल ने की है।

लेखक ने दिल्ली के कनॉट पैलेस का वर्णन करते हुये लिखा है कि बच्चों की शक्ल और शरारतें पहचानी सी लगती है क्योंकि बचपन की भोली तथा चंचल शक्ल तथा शरारतें सब जगह पाय: समान ही रहती है किन्तु उनकी माताओं में परिपक्वता के कारण चेहरे भिन्न-भिन्न है। बच्चों के चेहरे पर व्याप्त मासूमियत उनकी माताओं के चेहरे पर नहीं दिखाई देती।

आगे लेखक लिखते है कि उनके शरीर में युवतियों जैसा सौंदर्य नहीं है जिससे आकर्षित हुआ जा सके। उनका सौंदर्य उस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अवस्था में है जहाँ न तो उससे आकर्षित हुआ जाता है और न विरक्ति। बच्चों के थोड़े बड़े हो जाने के कारण मातृत्व की वह कोमलता भी विद्यमान नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'नई कहानियों के प्रतिनिधि संकलन 'एक दुनिया : समानान्तर' (राजेन्द्र यादव) की 'चीफ की दावत' कहानी से ली गई है जिसके लेखक भीष्म साहनी है।

दावत में अपनी मजाक उड़ाई जाने के कारण दुखी बुढ़िया की मानसिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

जैसे ही वह कोठरी में जाती है उसका धैर्य जवाब दे देता है और वह फूट-फूट कर रोने लगती है क्योंकि दावत में उसका अपमान हुआ था। उसकी आँखों से लगातार आँसू बहते है, जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

तब उसने हृदय को कड़ा करते हुये समझाया कि अपने पुत्र की खुशी के आगे यह अपमान निरर्थक है। वह अपनी बेटे की खुशी के लिए दिखाई नहीं देने की स्थिति में भी चीफ को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शिफ्ट करने के लिए उसकी इच्छा पूरी करेगी।

उसने रोते हुये ही अपने पुत्र के चिरायु होने की कामना की। पर उसके आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'मैला आँचल' का नायक आप किसे मानते हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा रचित उपन्यास है, जो अपनी आंचलिकता के कारण विशिष्ट है। इस उपन्यास में 200 से अधिक पात्र है, ~~किन्तु~~ इसलिए यह एक जटिल प्रश्न है कि इसका मुख्य नायक कौन है।

वस्तुतः 200 से अधिक पात्रों की उपस्थिति के बावजूद बावनदास, कालीचरण, डॉ प्रशांत ये तीन मानवीय पात्र ही नायक की भूमिका के लिए उपयुक्त सिद्ध होते हैं किन्तु बावनदास प्रारंभ से अन्त तक अंचल की स्थिति को परिवर्तित करने का प्रयास करने के बावजूद नहीं कर पाता है, अतः उसे नायक नहीं माना जा सकता।

कालीचरण उपन्यास के आरंभ से ही उग्र है तथा नायक बनने की क्षमता से युक्त है किन्तु आखिर में वह अपना महत्व खो देता है। डॉ प्रशांत स्वयं इसका नायक नहीं बनकर इस अंचल को नायक के रूप में स्वीकार करता है। वह कहता है -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

"मैं फिर साधना करूँगा, इस ग्रामवासिनी भारत माता के मैले आँचल तले।"

वस्तुतः 'मैला आँचल' का नायक वह अंचल ही है क्योंकि यह एक आँचलिक उपन्यास है, जिसकी पुष्टि स्वयं रेणु करते हैं-

"यह है 'मैला आंचल' एक आंचलिक उपन्यास, कथानक है पूर्णिया।"

जहाँ तक अंचल के नायक होने का प्रश्न है तो वह पूरी तरह इसका नायक भी सिद्ध होता है क्योंकि रेणु ने इसी अंचल की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों को उठाया है।

इस अंचल की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का वर्णन इसके नायकत्व को पुष्ट करता है क्योंकि भौगोलिक एवं सांस्कृतिक तत्व ही किसी स्थान विशेष की विशिष्टता दर्शाते हैं-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेणु लिखते हैं -

" ऐसा ही एक गाँव है मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब बूढ़ीकोशी पार करके जाना होता है।"

(भौगोलिक वर्णन)

" नायक जी हो नायक जी / खोले देहो किवड़िया, हो नायक जी।" (सांस्कृतिक वर्णन)

उस अंचल की शब्दावली, लोक संगीत तथा त्यौहारों की उपस्थिति अंचल के नायक होने के पक्ष में है।

साथ ही रेणु ने बिना किसी पक्षपात के उस अंचल की सभी अच्छाईयों तथा बुराईयों को प्रस्तुत किया है, जो किसी नायक को ही संदर्भित है। वे लिखते हैं-

" इसमें फूल भी है, शूल भी है, धूल भी है, गुलाब भी है। इसमें कीचड़ भी है, चन्दन भी है, सुन्दरता भी है, तथा कुरूपता भी है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस स्पष्ट है कि 'मैला आंचल' का नायक वह पूर्णिया जिले का मेरीगंज गाँव ही है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't wri
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या यशपाल कृत ऐतिहासिक उपन्यास है, जो समस्याओं की ऐतिहासिकता तथा उनकी निरन्तरता को तो प्रकट करता ही है साथ ही मानववादी विचारधारा को पुष्ट भी करता है।

दिव्या उपन्यास अनेक स्तरों पर अपना महत्व रखती है। इसका सर्वाधिक महत्व मानव को मानव रूप में स्थापित करना है। लेखक भूमिका में ही स्पष्ट करते है -

"मनुष्य भोक्ता नही कर्त्ता है।"

यशपाल ने प्रैक्सिस की अवधारणा के आधार पर मानव को परिस्थितियों का निर्माण कर्ता होने के साथ परिस्थितियों में परिवर्तन-कर्त्ता भी माना है। उपन्यास के अन्त में दिव्या द्वारा सामाजिक व्यवस्थाओं का खंडन उसे जैनेन्द्र की 'मृणाल' से भिन्न करता है क्योंकि वह सामाजिक विधान को मानने को बाध्य नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यशपाल ने दिव्या के माध्यम से नारी की समस्याओं को विभिन्न रूपों में उजागर किया है। चाहे कुलमाता हो या वेश्या अथवा दासी नारी का शोषण होता है। 'दिव्या' के द्वारा उस शोषण पर चोट की गई है।

समाज में व्याप्त परलोकवाद का खंडन 'दिव्या' के द्वारा किया गया है। मारिश तर्क देते हुये कहता है-

" जिस स्थूल प्रत्यक्ष शरीर व जगत का अनुभव सम्पूर्ण जन करता है ××× उसे मिथ्या मानना कहाँ तक तर्कसंगत है।"

वर्णव्यवस्था के दोष जिसके कारण अयोग्य व्यक्ति अवैध लाभ उठाता है तथा योग्य व्यक्ति वंचना का शिकार होता है। 'दिव्या' के द्वारा यशपाल ने वर्ण व्यवस्था पर चोट की है।

दिव्या का सर्वाधिक महत्त्व इसकी भूमिका से स्पष्ट होता है। जहाँ यशपाल लिखते हैं कि -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"इतिहास का मनन एवं चिंतन मानव का अपनी परम्परा में आत्म विश्लेषण है, वर्तमान में अपने आप को असमर्थ पाकर हम अतीत में सफलता के सूत्र पाते हैं।"

अर्थात, मानव सभ्यता प्राचीनकाल से ही सफलता - असफलता के बीच विकसित हुई है। अतः वर्तमान में किसी असफलता को पकड़कर बैठ जाना यह मानव सभ्यता के लिए ही अहितकर होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व पर विचार कीजिये।

मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'महाभोज' वर्ष तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन तो करता ही है वर्तमान परिस्थितियों को भी अपने में समेटता है। यह उपन्यास इसके द्वारा उठाई समस्याओं के साथ इसके समाधान पक्ष के लिए भी अपना महत्त्व रखता है।

'महाभोज' में जिस राजनीतिक-अपराधी गठजोड़ का दृश्य है वह वर्तमान राजनीति का सत्य है। निर्वाचन आयोग के अनुसार वर्तमान लोकसभा में 30 % अपराधी है, जो इस समस्या की भयावहता को दर्शाता है।

महाभोज में दर्शाया गया सामाजिक शोषण तथा निम्नवर्गों को जिन्दा जला दिया जाना वर्तमान में भी दिखाई देता है। सामाजिक शोषण का वर्तमान स्वरूप भले ही तत्कालीन रूप के समान भयावह नहीं हो किन्तु 'मैनुअल स्केवेंजिंग' संविधान के आदर्शों के प्रतिकूल है

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाभोज में राजनीतिक तथा सामाजिक विद्रूपता के अतिरिक्त मध्यवर्ग की भूमिका को भी स्पष्ट किया है। शिक्षित मध्यवर्ग का यह दायित्व मुक्तिबोध के यहाँ भी उपस्थित है, जो अपराध की तरह है।

शिक्षित मध्यवर्ग को संवेदनशील होकर निम्न वर्गों के उत्थान का प्रयास करना चाहिए किन्तु वे केवल क्षणिक संवेदनशीलता दर्शाते है तथा उसे कुछ देर बाद अखबार के साथ रद्दी मे फेंक देते है।

'महाभोज' का सर्वाधिक महत्व इसके समाधान पक्ष में है। मन्नू भंडारी ने स्पष्ट किया है कि बिसु की मौत के पश्चात् अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले समाप्त नहीं होंगे तथा सक्सेना के व्यक्तित्वांतरण की भाँति अनेक लोग इस कार्य के लिए तत्पर रहेंगे। ~~के लिखती है~~- वे इसका समर्पण निम्न प्रकार करती है

" दुर्निवार सम्मोहक भरी उस लपकती आग्नेय

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

लीक के लिए जो बिन्दु और बिन्दा तक ही रुकी नहीं रहती।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'महाभोज' सामाजिक तथा राजनीतिक विद्रूपताओं को उजागर करते हुये उनका समाधान कर सामाजिक समरसता की भावना का विकास करता है।

कृपया इस स
कुछ न लिखे
(Please don'
anything in